eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 05, May 2022

अरस्तू और सिकन्दर– एक वैचारिक विश्लेषण

[1]डॉ0 अरविंन्द कुमार शुक्ल
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय, बिंदकी फ़तेहपुर उ0प्र0

Abstract

अरस्तू (384–322 ई.पू.) सभी समय के महानतम दार्शनिकों में गिने जाते हैं। अरस्तू को दार्शनिक प्रभाव के संदर्भ में देखा जाए तो केवल प्लेटो ही उनके समकक्ष हैं। अरस्तू के कार्यों ने विलम्बित प्रक्रिया से लेकर पुनर्जागरण तक सदियों के दर्शन को आकार दिया, आज भी उनका गहन, गैर–पुरातनपंथी अभिरुचि के साथ अध्ययन किया जाता है। एक विलक्षण शोधकर्ता और लेखक के रुप में अरस्तू ने बहुत सारे विचार दिए, जिनमें से लगभग 33 विचार आज भी अध्ययन किया जाता है। अरस्तू के मौजूदा लेखन में तर्क, तत्वमीमांसा और मन के दर्शन से लेकर नैतिकता, राजनीतिक सिद्धांत, सौंदर्यशास्त्र और अनुभवजन्य जीव विज्ञान जैसे मुख्य रूप से गैर–दार्शनिक क्षेत्रों तक कई तरह के विषय शामिल हैं, जहाँ उन्होंने विस्तृत पौधे और जानवरों के अवलोकन और विवरण में उत्कृ ष्टता हासिल की। इन सभी क्षेत्रों में, अरस्तू के सिद्धांतों ने रोशनी प्रदान की है, प्रतिरोध का सामना किया है, बहस को जन्म दिया है, और आम तौर पर एक स्थायी पाठक वर्ग की निरंतर रुचि को अभिप्रेरित भी किया है। अपनी व्यापक सीमा और दूरदर्शिता के कारण, अरस्तू का दर्शन आसानी से समाहित नहीं किया जा सकता।

मुख्य शब्द– प्राचीन राजनीतिक विचारक, अरस्तू, सिकन्दर, वैचारिक विश्लेषण

Introduction

सबसे पहले, वर्तमान, सामान्य प्रविष्टि अरस्तू के जीवन का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करती है और उनकी केंद्रीय दार्शनिक प्रतिबद्धताओं की विशेषता बताती है, अरस्तू की सबसे विशिष्ट विधियों और सबसे प्रभावशाली उपलब्धियों पर प्रकाश डालती है। दूसरे सामान्य विषय हैं, जो अरस्तू की दार्शनिक गतिविधि के मुख्य क्षेत्रों का विस्तृत परिचय देते हैं। अंत में, जो अधिक विस्तार से अधिक संकीर्ण रूप से केंद्रित मुद्दों की जांच करते हैं, विशेष रूप से हाल के अरस्तू के विद्वानों में केंद्रीय चिंता का विषय विशेष विषय हैं।

384 ईसा पूर्व में जन्मे उत्तर–पूर्वी ग्रीस के मैसेडोनियन क्षेत्र के स्टैगिरा के छोटे से शहर में अरस्तू को सत्रह साल की उम्र में प्लेटो की अकादमी में अध्ययन करने के लिए एथेंस भेजा गया था, जो उस समय ग्रीक दुनिया में शिक्षा का एक प्रमुख स्थान था। एथेंस में रहने के बाद, अरस्तू 347 में प्लेटो की मृत्यु तक अकादमी से जुड़े रहे, जिस समय वे एशिया माइनर में असोस के लिए रवाना हुए, जो वर्तमान तुर्की के उत्तर–पश्चिमी तट पर है। वहाँ उन्होंने अकादमी में शुरू की गई दार्शनिक गतिविधि को जारी रखा, लेकिन सभी संभावनाओं में उन्होंने समुद्री जीव विज्ञान में अपने शोध का विस्तार करना भी शुरू कर दिया। अरस्तू लगभग तीन वर्षों तक असोस में रहे, जब जाहिर तौर पर उनके मेजबान हर्मियस, एक मित्र और पूर्व शिक्षाविद जो असोस के शासक भी थे, की मृत्यु के बाद, अरस्तू पास के तटीय द्वीप लेस्बोस में चले गए। वहाँ उन्होंने दो साल तक अपने दार्शनिक और

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 05, May 2022

अनुभवजन्य शोध को जारी रखा, लेसबोस के मूल निवासी थियोफ्रेस्टस के साथ मिलकर काम किया, जिसके बारे में प्राचीन काल में प्लेटो की अकादमी से जुड़े होने की भी सूचना मिली थी।

लेसबोस में रहते हुए, अरस्तू ने हर्मियस की भतीजी पायथियस से शादी की, जिससे उनकी एक बेटी भी हुई, जिसका नाम भी पायथियस था। जब सिकंदर मकदूनिया में ही था और युवावस्था के करीब था। उसका स्वभाव तो बेहद शांत था, लेकिन वह जो ठान लेता, उसे करके ही मानता था। उसका स्वभाव देखते हुए पिता फिलिप ने उसे किसी मामूली शिक्षक के भरोसे छोड़ देना ठीक ना समझा। उसने अपने समय के सबसे बड़े विद्वान अरस्तु को बुलवा भेजा और भरपूर पुरस्कार देते हुए उन्हें सिकंदर की शिक्षा का भार सौंपा।

अरस्तु ने सिकंदर को नीतिशास्त्र और राजनीति विज्ञान की शिक्षा दी। उन्होंने उन बेहद कठिन सिद्धांतों के बारे में भी उसे बताया, जिसे उस समय के दार्शनिक लोग महज अपने दो–चार चुने हुए शिष्यों को ही बताया करते थे, वह भी मुंहजबानी। शिक्षा प्राप्त करने के बाद सिकंदर विश्व विजय के अपने अभियान पर निकल गया। जब सिकंदर एशिया में था, उसे खबर मिली कि अरस्तू ने उन सिद्धांतों पर कुछ किताबें लिखी हैं। किताब आने की बात सुनकर सिकंदर ने तुरंत अरस्तु को पत्र लिखकर कहा, 'आपने अपने उन सिद्धांतों को पुस्तक रूप में लाकर अच्छा नहीं किया। जो बातें सिर्फ मुझे ही बताई गई थीं, अगर वे सबके लिए सुलभ कर दी गईं, तो फिर मेरी शिक्षा और दूसरों की शिक्षा में अंतर ही क्या रह जाएगा?'

कतिपय इतिहासकार यह भी मानते हैं कि 343 ई0पू0 में, मैसेडोन के राजा फिलिप के अनुरोध पर, अरस्तू ने राजा के तेरह वर्षीय बेटे, अलेक्जेंडर को पढ़ाने के लिए लेसबोस को मैसेडोनिया की राजधानी पेला के लिए छोड़ दिया, वह लड़का जो अंततोगत्वा सिकंदर महान बन गया और अरस्तू का महान शिष्य कहलाया। हालाँकि महान सिकंदर पर अरस्तू के प्रभाव के बारे में अटकलें इतिहासकारों के लिए अप्रतिरोध्य साबित हुई हैं, वास्तव में उनके संपर्क के बारे में बहुत कम ठोस जानकारी है। संतुलित रुप से यह निष्कर्ष निकालना उचित लगता है कि कुछ शिक्षण हुआ था, लेकिन यह केवल दो या तीन साल तक चला, जब सिकंदर तेरह से पंद्रह वर्ष का हो गया। पंद्रह साल की उम्र तक, सिकंदर जाहिर तौर पर अपने पिता के लिए एक उप सैन्य कमांडर के रूप में काम कर रहा था, एक ऐसी परिस्थिति जो उन इतिहासकारों के निर्णय को कमजोर करती है, जो शिक्षण की लंबी अवधि का अनुमान लगाते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि उनका जुड़ाव आठ साल तक चला। इस संभावना को निर्णायक रूप से खारिज करना मुश्किल है, क्योंकि 341–335 से अरस्तू के जीवन की अवधि के बारे में बहुत कम जानकारी है। जाहिर है कि वह दूसरे एथेंस लौटने से पहले स्टैगिरा या मैसेडोन में पाँच साल और रहे।

सिकंदर ने लिखा, 'मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि राज्य का विस्तार करने से ज्यादा महत्वपूर्ण मेरे लिए यह है कि दुनिया में ज्ञान की जितनी भी बातें हैं, उनमें मुझे कोई मात ना दे सके।' अरस्तु को जब यह पत्र मिला तो अपने शिष्य की शंका का समाधान करते हुए उन्होंने लिख भेजा कि 'मेरी पुस्तकें आ गई हैं और नहीं भी आई हैं। इन पुस्तकों को वही समझ पाएगा, जिसे मैंने ये सिद्धांत समझाए हैं। बाकियों के लिए ये कोरी किताबें हैं।' बहुत कम लोग जानते हैं कि अरस्तु की इन पुस्तकों में मेटाफिजिक्स की गुत्थियां थीं जिनसे सिकंदर पहले ही अवगत हो चुका था।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 05, May 2022

अरस्तू को दर्शन, राजनीति, काव्य, आचारशास्त्र, शरीर रचना, दवाइयों, ज्योतिष की बेहतरीन जानकारी थी. उनके लिखे हुए ग्रन्थों की संख्या लगभग 400 तक बताई जाती है। अरस्तू की कही ऐसी 10 मुख्य विचार निम्नवत हैं–

1. मनुष्य प्राकृतिक रूप से ज्ञान कि इच्छा रखता है।
2. डर बुराई की अपेक्षा से उत्पन्न होने वाले दर्द है।
3. कोई भी उस व्यक्ति से प्रेम नहीं करता जिससे वो डरता है।
4. सभी भुगतान युक्त नौकरियां दिमाग को अवशोषित और अयोग्य बनाती हैं।
5. मनुष्य के सभी कार्य इन सातों में से किसी एक या अधिक वजहों से होते हैं– मौका, प्रकृति, मजबूरी , आदत, कारण, जुनून, इच्छा।
6. बुरे व्यक्ति पश्चाताप से भरे होते हैं।
7. मनुष्य अपनी सबसे अच्छे रूप में सभी जीवों में सबसे उदार होता है, लेकिन यदि कानून और न्याय ना हों तो वो सबसे खराब बन जाता है।
8. संकोच युवाओं के लिए एक आभूषण है, लेकिन बड़ी उम्र के लोगों के लिए धिक्कार।
9. शिक्षा बुढ़ापे के लिए सबसे अच्छा प्रावधान है। दुनिया के सभी मूर्ख हमारे गुरू हैं और दुनिया में मूर्ख कभी मरते नहीं।
10. चरित्र को हम अपनी बात मनवाने का सबसे प्रभावी माध्यम कह सकते हैं।

संदर्भ सूची–

1. Plato's Republic, A Word by Word Guide to Translation (Vol. 1: Chapters 1-12) BrownWalker Press, Drew Arlen Mannetter, Drew Arlen Mannetter ISBN:9781627345231, 162734523X 2015
2. Annas, Julia (2001). Classical Greek Philosophy. Oxford University Press. *ISBN 978-0-19-285357-8*.
3. *Aquinas, Thomas* (2013). *Summa Theologica*. e-artnow. *ISBN 978-80-7484-292-4*.
4. Aristoteles (31 January 2019) [1831]. Bekker, Immanuel (ed.). *"Aristotelis Opera edidit Academia Regia Borussica Aristoteles graece"*. apud Georgium Reimerum. *Retrieved 31 January 2019* – via Internet Archive.
5. *"Aristoteles"*. Gazetteer of Planetary Nomenclature. United States Geological Survey. *Retrieved 19 March 2018*.
6. *"Aristoteles-Park in Stagira"*. Dimos Aristoteli. *Retrieved 20 March 2018*.
7. *"Aristotle (Greek philosopher)"*. Britannica.com. Britannica Online Encyclopedia. *Archived* from the original on 22 April 2009. *Retrieved 26 April 2009*.
8. पाश्चात्य दर्शन, 15 फ़रवरी 2022 विमल अग्रवाल, SBPD Publications Agra
9. ग्रीक एवं मध्यकालीन दर्शन, विमल अग्रवाल 2021 SBPD Publications Agra